Date : / /

पाठ = 4. इस्लाम का उदय और विस्तार

इस्लाम का उदय (स्त्रोत) :-

इतिवृत्त :- घटनाओ का वृतांत कालक्रम अनुसार
अर्द्ध ऐतिहासिक कृतियाँ :- जीवन चरित्र (सिरा)
पैगम्बर के कथन :- हदीय (संग्रह)
कुरान की टिकाएँ :- तफसीर
अखबार
दस्तावेज साक्ष्य
मुद्रा
शिलालेख (खुरेद कर लिखा हुआ)

शुरुआत (612 ई.)
एक समाज (उम्मा) आस्तिक व्यक्ति।
अरब मे इस्लाम का उदय, धर्म निष्ठा, समुदाय और राजनीति

पैगम्बर मुहम्मद
612 ई. में - खुदा का संदेश वाहक
एक ईश्वर (अल्लाह)
एक समाज
नियम :- इबादत

दैनिक प्रार्थना
नैतिक सिद्धांत
चोरी न करना
खैरात बाटना

उम्मा की स्थापना / आस्तिक लोग
मक्का के वे लोग प्रभावित (जो व्यापार और धर्म

अलग थे।
इनको स्वीकारने वाले मुसलमान कहलाए
☆ पैगम्बर मुहम्मद भाषा और संस्कृति से अरबी थे
☆ इनका कबीला कुरैश, मक्का
☆ धर्म पर नियंत्रण
☆ काबा - बुत
☆ इबादत गाह की यात्रा - हज
☆

## काबा

एक पवित्र स्थल जहाँ हिंसा वर्जित थी।
☆ दर्शनार्थियों को सुरक्षा।
☆

## अरब

कबीलो मे विभाजन
☆ नेतृत्व शेख (बुद्धि और साहस)
☆ हर कबीले के स्वयं के देवी-देवता (बुतो मे)
☆ बुतो को (सनम)
☆

अधिकतर कबीले खानाबदोश (बद्दू)
☆ (रेगिस्तान मे ऊँटो के लिए)

## समृद्ध शाली लोगो का विरोध

622 मे पैगम्बर मुहम्मद को मदीना के लिए जाना
☆ पड़ा (हिजरी)
उसी दिन से हिजरी कलेण्डर की भी शुरूआत
☆ हो गई। (इस्लाम कलेण्डर का प्रारम्भ)

Date : / /

## राजनीति

धार्म :- लोग → राजनीतिक संस्था

☆ उम्मा को बड़े समुदाय में बदला गया।
☆ कर्मकाण्ड
☆ खैरात और राजस्व से जीवित रहे।
☆ छापे मारना
मक्का के यहूदी + मदीना टकराव)

खलीफाओं का शासन - विस्तार, गृहयुद्ध और सम्प्रदाय निर्माण

☆ 632 ई. पैगम्बर मुहम्मद (मृत्यु)

राजनीतिक संस्था



→ उम्मा → विद्रोह (को रोकना)
→ खिलाफत का उदय → कबीलो पर नियंत्रण (शेख + जबा + व्यवसा)
↘ संसाधन एकत्रित करना

समुदाय का पहला नेता - अमीर अलमोमिन
632-634 पहले खलीफा - अबु बकर - विद्रोह का दमन क
634-644 दूसरा खलीफा - उमर - विस्तार की नीति
इसाई पू. (बाइजेनटाइन (पू. - प.)
प. ससानी क्षेत्र तक (परतुश्त)
644-656 तृतीय खलीफा - उथमान - मध्य एशिया तक नियंत्रण (कुरेश)
656-661 चौथा खलीफा - अली - दो युद्ध लड़े

## अरब में इस्लाम का उदय :-

Page No.: PANKAJ
Date: / /

### शुरुआत :-

☆ 612-632 मे पैगम्बर मुहम्मद ने एक ईश्वर (अल्लाह) की पूजा (इबादत) करना प्रारम्भ किया।

☆ इस्लाम को मानने वाले (उम्मा) एक समाज का प्रचार किया। जो कि इस्लाम का मूल था।

☆ मुहम्मद साहब सौदागर थे वे भाषा संस्कृत और अरबी के ज्ञाता थे।

☆ 6 वीं शताब्दी मे अरब संस्कृति केवल अरब प्राय-द्वीपीय और दक्षिण सीरिया व मेसोपोटामिया के क्षेत्र तक सीमित थी।

☆ अरब निवासी कबीलो मे बँटे हुए थे।

☆ प्रत्येक कबीले का नेतृत्व एक शेख करता था।

☆ शेख का चुनाव पारावारिक आधार पर कम साहस बुद्धी और योगिता के आधार पर ज्यादा होता था।

☆ प्रत्येक कबीले के अपने देवी-देवता होते थे।

☆ यह बुतो (सनम के रूप मे) मास्जिदो मे पूजे जाते थे। बहुत से कबीले बेदूइन (खानाबदोश) होते थे।

☆ यह ऊँट के लिए चाराह खजूर की तलाश मे रेगिस्तान मे आते जाते रहते थे।

* इनमे से कुछ शहरो मे बस गए व व्यापार और खेती का काम करने लगे।

पैगम्बर मुहम्मद साहब :—

- पैगम्बर मुहम्मद साहब का अपना एक कबीला था। नाम → कुरैश (मक्का मे स्थित था)
- इस पर पैगम्बर मुहम्मद का नियंत्रण था।
- मक्का का ढाँचा घनाकार था जिसे काबा के नाम से जाना जाता था।
- काबा मे बुत रखे जाते थे।
- काबा एक पवित्र स्थल होता है।
- बाहरी लोग भी अपने बुत काबा मे रखा करते थे वे हर साल इसकी यात्रा भी किया करते थे। (जिसे हज कहा जाता है)
- काबा को एक पवित्र जगह (हरम) कहा जाता था। काबा मे हिंसा वर्जित थी। काबा मे दर्शनार्थियो को सुरक्षा प्रदान कराई जाती थी।
- तीर्थ यात्रा और व्यापार के कारण खानाबदोश और बचे हुए कबीलो मे आपसी सम्बन्ध बेहतर।
- मुस्लीमो को शीघ्र ही मक्का के संभ्रान्त लोगो को बाहरी लोगो का सामना करना पडा। जिन्हे देवी-देवता को ठुकराया जाना बुरा लगता था और

Page No.: PANKAJ
Date: / /

- पैगम्बर मुहम्मद से प्रभावित होकर बहुत से कबीले अधिकांश बेदूइन ने अपना धर्म बदलकर इस्लाम को अपना लिया।
- इस प्रकार मदीना राज्य की प्रशासनिक राजधानी और मक्का उनका धार्मिक केन्द्र बन गया था।

## खलीफाओ का शासन :-

- 632 ई. मे पैगम्बर मुहम्मद साहब का देहांत होने के बाद कोई भी व्यक्ति इस्लाम का पैगम्बर नही बन सका।

## परिणाम :-

- राजनैतिक सत्ता अस्थिर हुई मुस्लीम समुदाय मे गहरे मतभेद उत्पन्न हुए।

## बडा परिवर्तन :-

## खलिफाओ का शासन :-

खलिफाओ का अर्थ => इस्लाम धर्म की नीव को का करने वाले रक्षक स्वयं पैगम्बर के प्रतिनिधि को खलीफा कहा जाता है।

खलीफा

अबु बकर    उमर    उथमान    अली

PANKAJ
Page No.:
Date: / /

- इन खलीफाओं ने पैगम्बर साहब के साथ बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने की रीति अपनाई।
- उनके द्वारा बताए गए मार्ग निर्देश को कायम रखा

खिलाफत संस्था के 2 प्रमुख उद्देश्य :-

(1) एक तो कबीलों पर नियंत्रण कायम रखना।
(2) राज्यों के लिए संसाधन जुटाना।

- पैगम्बर साहब की मृत्यु के बाद कबीले इस्लामिक राज्यों से टूट गए।
- कुछ कबीलों द्वारा अपने समाज की स्थापना के लिए स्वयं के पैगम्बर बना लिए गए।

पहला खलीफा :-
अबू बकर:
अबू बकर अभियान द्वारा विद्रोह का दमन किया गया।

दूसरा खलीफा :-

उमर ⇒ सत्ता की विस्तार की नीति को अपनाया।

- खलीफा जानते थे कि व्यापार और करों से उम्मा को नहीं चलाया जा सकता।
- खलीफा उनके सेनापति द्वारा पश्चिम बेइजंटाइन साम्राज्य (ईसाई धर्म)
पूर्व में ससानी साम्राज्य (ईरान के प्राचीन धर्म जरतु को जीतने के लिए अपनी शक्ति जुटाई)

- यह दोनो ही साम्राज्य उस समय शक्ति शाली थे।
- अरब मे इन साम्राज्य के पास अच्छे संसाधन मौजूद हुआ करते थे।

अरबो के आक्रमण से इन साम्राज्यो पर पड़ा प्रभाव

- इन दो साम्राज्यो मे धार्मिक संघर्ष और अभिजात वर्गों के विद्रोह के कारण घिरावट आने लगी।

परिणाम :-

- अरबो द्वारा युद्ध और संधियो द्वारा शासन करना आसान हुआ।
- तीन सफल अभियान चलाए गए।
- इसमे अरबो मे सीरिया, ईराक, ईरान और मिस्र व मदीना के नियंत्रण मे ला दिया।

तीसरा खलीफा :-

उथमान :-

- मध्य एशिया तक बढ़ाने का काम चलाया।
- पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु के दशक के अंदर नील और ऑक्सेस के बीच विशाल क्षेत्र को अपने नियंत्रण मे ले लिया।

ये इलाके आज भी मुस्लीम शासन के अतंर्गत ही है।

जीते गए सभी क्षेत्रों में खलीफाओं ने प्रशासनिक ढांचा लागू किया।

1. अध्यक्ष → अमीर
2. मुखिया → अशरफ बनाए गए।

- शासक वर्गों और गैर सैनिकों को लूट का हिस्सा मिलता था।
- साथ ही मासिक वेतन भी प्राप्त होता था।
- गैर मुस्लीम पर कर (जजिया और खैराज) लगाए जाते थे।

राजनैतिक विस्तार और एकीकरण का कार्य अरब कबीलों में सरलता से नहीं कर पाए।

कारण :—

- झगड़े उत्पन्न होने लगे।
- प्रारम्भिक इस्लामी राज्य के शासन में मक्का के कुरेश लोगों का ही बोलबाला था।

तीसरा खलीफा :—

उथमान :

- 644-656 में भी एक कुरेश ही था।
- इन्होंने अधिक नियंत्रण प्राप्त करने के लिए अपने ही प्रशासन को अपने आदमियों द्वारा भर दिया।

PANKAJ
Page No.:
Date: / /

मुआविया द्वारा 661 में अपना एक अलग खलीफा घोषित हुआ और उम्मद वंश की स्थापना हुई जो 756 तक चलता रहा।